श्रीश्रीठाकुर अनुकूलचन्द्र कथित
गणसेवक वाहिनी प्रसंग

संकलक
श्री विद्युत रंजन चक्रवर्ती

डि. टि. पि. - श्री बिष्णुबिभा प्रधान।

श्रीश्रीठाकुर अनुकूलचन्द्र कथित
गणसेवक वाहिनी प्रसंग

निवेदन

चालीस दशक के करीब करीब प्रथमार्ध से ही परम प्रेममय श्रीश्रीठाकुर अनुकुलचन्द्र व्यापक रूप से जनगण कि सेवा करने के साथ-साथ देश या राष्ट्र की कृषि, उद्योग, स्वास्थ और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत से मजबूत बना डालने के लिए विशाल स्वेच्छासेवक दल बनाने की बात बारबार कहते रहे थे और यह दल कैसे काम करेगा उस सम्बन्ध में भी दिशा-निर्देश करते रहे थे | प्रारम्भ में उनहोंने इस स्वेछासेवक दल का नामकरण गणसेवक वाहिनी के रूप में क्या था | परवर्त्ती काल में यद्यपि यह 'स्वस्तिसेवक वाहिनी' के नाम से उल्लिखित होता आ रहा है |

इष्टादेशानुसार 'गणसेवक वाहिनी' के गठन और उसके संचालन की सुविधा के लिए इस संकलन में गणसेवक वाहिनी अथवा स्वस्तिसेवक वाहिनी के सम्बन्ध में श्रीश्रीठाकुर की उक्तियों को आलोचना-प्रसंग के विभिन्न खंड़ों से संकलित कर दिया गया |

वन्दे पुरुषोत्तमम् |

१८वाँ ज्येष्ठ, १४०८ बंगला
विवेक वितान,
सत्संग, देवघर |

विनीत:
श्री विद्युत रंजन चक्रवर्ती

क्या करना उचित नहीं है ?

कृष्टि विरोधी, जीवन विरोधी, समाज के लिये अकल्याणकर कार्यों को किसी भी हालत से बर्दाश्त करना उचित नहीं है | उससे Public Safety (जन-सुरक्षा) नष्ट होती है | देश में अगर militia form (सेनादल-गठन) करना हो या martial spirit (क्षात्र शक्ति) जगाना हो- तो वह धर्म, कृष्टि और लोककल्याण की गहरी प्रतिष्ठा के लिए | इसीलिए मैं कुष्टिप्रहरी या धर्मगुडों की बातें कहा करता हूँ - वे लोग खाना-उना खायेंगे, आनन्द से घुमेंगे | और कहीं भी अत्याचार, अनाचार, अविचार, शाश्वत धर्म विरोधी आचरण नहीं होने देंगे - मजबूत हाथों से उनका प्रतिरोध करेंगे | इस प्रकार की स्थिति की सृष्टि करनी चाहिए जिससे कि अकल्याणकर चलनों से चलना लोगों के लिए असंभव हो जाए |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र., ६/५.९.४५

01: गणसेवक वाहिनी कि सदस्य संख्या कितनी होगी ?

02: शक्ति उद्बोधन (जागरण) के लिये गणसेवक वाहिनी

03: गणसेवकों की पोषाक कैसी होगी ?

04: गणसेवक क्या कार्य करेंगे ?

05: गणसेवकों को किस प्रकार संग्रह करना होगा ?

06: गणसेवकों में वीरता जाग्रत करने के लिये क्या करना होगा ?

07: गणसेवकगण किस प्रकार से काम करेंगे?

08: गणसेवक वाहिनी का ठीक ढंग से गठन करें

09: गणसेवकगण सेवा कि बाढ़ ला दें |

10: गणसेवक वाहिनी क्यों चाहिये ही?

11: देशी खेलों की भी चर्चा करना

12: गणसेवक का संग्रह करना ही चाहिये

13: गणसेवक वाहिनी की नियमावली सम्बन्धी किताब

14: गणसेवक वाहिनी कोई प्रतिक्रियात्मक संगठन नहीं है

15: कृषि और शिल्प के सम्बन्ध में क्या करना होगा ?

16: किन-किन कुटीर-शिल्पों की और लक्ष रखना होगा ?

17: सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं को शुभावह कर देना होगा

18: जलाभाव निवारण हेतु गणसेवक-वहिनी

19: देश और दस का स्वस्ति विधान ही गणसेवक का काम

20: || वर्त्तमान परिस्थिनी में करणीय ||

21: हमलोग किस बुनियाद पर खड़े होंगे ?

22: गणसेवकगण सभी को बचायेंगे

23: गणसेवक वाहिनी एक पृथक संस्था होगी

24: गणसेवक प्रयोजन के अनुसार शान्ति सेना का भी काम करेंगे |

25: गणसेवक आत्मत्याग करके मनुष्य के मंगल के लिये आत्मनियोग करेगा

26: गणसेवकों को जो करना होगा

27: सरकारी व्यवस्थापना से गणसेवक वाहिनी

28: गणसेवक वाहिनी के जीवन चलन का आदर्श

श्रीश्रीठाकुर अनुकूलचन्द्र कथित

गणसेवक वाहिनी प्रसंग

01: गणसेवक वाहिनी कि सदस्य संख्या कितनी होगी ?

हमलोगों के देश में जो Population (जनसंख्या) है, उस हिसाब से इण्डिया से 5/7 कोरोड़ गणसेवक वाहिनी का सदस्य संग्रह करने से अच्छा होगा | वे सब देश के स्वास्थ, शिल्प, कृषि और सुरक्षा के लिये उत्तरदायी होंगे | वे सब यदि सभी तरह से सुशिक्षित संगठित और सक्रीय हो जायँ, तो उससे भारत कि उन्नति होगी ही, सभी उपकृत होंगे |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` `- आ. प्र., २/२३.७.४०

02: शक्ति उद्बोधन (जागरण) के लिये गणसेवक वाहिनी

आजकल साम्प्रदायिक विरोध का जो माहौल बन रहा है, वह भी बहुत चिन्ताजनक है, इसलिये धर्म-गुण्डाओं की आवश्यकता है, ताकि मनुष्य अकारण निपीड़ित या विध्वस्त नहीं हो | हमलोग जिन नारायण की पूजा करते हैं, वे शंख-गदा-चक्र-पद्मधारी हैं | ढाल नहीं, तलवार नहीं, निधिराम सरदार बनने से नहीं होगा | अर्थात जीवन-संग्राम में आत्मरक्षा के लिये उपयुक्त हथियार और व्यवस्था की आवश्यकता है | यह व्यवस्था सात्विक साधना का ही अंग है | इन सामग्रिक साधनों की हम लोगों ने जब से उपेक्षा की है, उसी दिन से हम लोग हीनवीर्य हो गये | सैकड़ों वर्षों से पराधीन रहने के कारण हमलोगों के देश में क्षत्रियों के रहने पर भी जैसे नहीं रहने के बराबर है | किसी जाती में चाहे जितना भी गुण क्यों न रहे उनमें यदि क्षात्रवीर्य नहीं रहे, पराक्रम नहीं रहे, धुरंधर कूटनैतिक प्रतिभा नहीं रहे तो उस दुर्बलता के रंध्र-पथ से बहुत सारे कुग्रह ही उस पर हावी हो जाते हैं | इसलिये मैं क्षात्र-शक्ति के उद्बोधन (जागरण) की बातें कहता हूँ | सभी के लिये थोड़ा-बहुत क्षात्रोचित अनुशीलन (अभ्यास) करना अच्छा है | उसकी बहुत उपयोगिता है | यदि हमलोगों के देश में युद्ध या इस प्रकार की अराजकता नहीं भी हो, तब भी एक ही माघ से शीत चला नहीं जायगा | उत्पात और उपद्रव से आत्मरक्षा की आवश्यकता सभी समय रहेगी | इसके अतिरिक्त क्षात्र प्रतिभा सम्पन्न दल यदि तैयार रहता है, तो वे सब खेती-बारी करना, बंजर भूमि को खेती योग्य, रास्ता बनाना, बांध बनाना, पोखोर खनना, नहर खोदना, जंगल साफ करना, शिल्पकारी करना, लाठी, छूरा, मुक्केबाजी इत्यादि सीखना और सिखाना पहरा देना आदि, अर्थात

संक्षेप में एक साथ कृषि, शिल्प, स्वास्थ और सुरक्षा इन चारों कार्यों को लेकर रह सकते हैं | और खूबी तो यह है कि लोग यदि यह जान जायँ कि अन्याय करने से निस्तार नहीं है, मेरे पीछे सहस्त्र आँखें है, सहस्त्र डंडा मुस्तैद हैं तब अन्याय करने का इतना साहस नहीं करेंगे | भय से भी बहुत संयत रहते हैं, दंड देने की आवश्यकता ही कम पड़ती है | एक तरफ यदि ऋत्विक हों और एक ओर यह दल रहे, तो इससे सेवा, स्वस्ति, शासन, तोषण के जरिये मनुष्य ठीक रहते हैं |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` `-आ.प्र., ३/२०.३.४२

03: गणसेवकों की पोषाक कैसी होगी ?

Civil defence (नागरिक-सुरक्षा-व्यवस्था) के लिए एक विशाल Volunteer organisation (स्वयं सेवी-संघ) तैयार करना होगा | उन सबका परिधान हरा शर्ट, हरा पैंट, उष्णीश (पगड़ी, सफा, मुकुट) इत्यादि होगा | उन सब को एक Badge (परिचय चिन्ह) भी रहेगा | 'घर में भोजन करके वन की भैंस भगाना' अर्थात निःस्वार्थ सेवा करने वाले कुछ लोग यदि नहीं हों तो लोगों की रक्षा नहीं की जायगी |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` `- आ. प्र. ३/२९.३.४२

04: गणसेवक क्या कार्य करेंगे ?

जन सेवा और जन सुरक्षा विधान ही उन सभी का प्रधान कार्य होगा | आपलोग जो सभी को कृषि के विषय में सजाग करना चाहते हैं, ये लोग, लोगों को व्यवहारिक रूप से उन्नततर कृषि प्रणाली बतलाकर सभी को उस दिशा में सहयोग कर सकते हैं | निश्चय ही इन सबों को भी training (प्रशिक्षण) देनी होगी | कृषि के सम्बन्ध में और लोगों की विपत्ति-आपत्ति के समय रक्षा करने के संबंधों में इन सबों को train-up (प्रशिक्षित) कर देना होगा | समवेत रूप से शारीरिक श्रम के द्वारा ये सब बहुत काम कर दे सकेंगे | जैसे कहीं पर नहर खोदने की आवश्यकता है | दस-बीस हजार लोग यदि एक साथ लग जाँय तो एक नहर खोदने में कितने दिन लगेंगे ? हो सकता है कहीं पर पच्चीस माइल लम्बा रास्ता तैयार करने की आवश्यकता है, इतने लोग यदि आपके हाथ में हों, तो आपको चिंता किस बात की ? Government (सरकार) कुछ करे या नहीं करे, इन लोगों के द्वारा आपलोग बहुत कुछ कर सकते हैं |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ३/२९.३.४२

05: गणसेवकों को किस प्रकार संग्रह करना होगा ?

मूलकार्य आपलोगों (ऋत्विकों) का है | पहला काम हुआ खूब दीक्षा देना | दीक्षा पाकर फिर मनुष्य शिथिल न हो जाय, इसके लिये उन सबों के पीछे लगे रहना है | उन सभी के साथ उठाना-बैठना है, उन सभी के सुख-दु:ख का भागी बनना है, यजन-याजन- इष्टभृति-सदाचार इत्यादि में अभ्यस्त करा देना है | एक-दुसरे की सेवा-सहायता करवाना है, यहाँ लेकर आना है, पुस्तक-पत्रिका आदि पढाना है, एक साथ काज-कर्म, आमोद-उत्सव करना है, ऐसे कितने उपाय हैं, क्या उन सभी की सूची बनाकर दिया जा सकता है ? काम करने वाला आदमी होने पर उसके मस्तिष्क में नित्य नूतन सूझ-बुझ आती रहती है | ....ऋत्विक, अध्वर्यु, याजकगण- इष्ट के प्रति टान के साथ इष्ट-प्रीत्यर्थ दीक्षितों के लिये करेंगे |.... कहीं पर कुछ लोगों के दीक्षित हो जाने पर उनमें से जो कर्मी होने योग्य हों, उनको चुनकर उनके पीछे अलग से परिश्रम करना है |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ३/२.३.४२

06: गणसेवकों में वीरता जाग्रत करने के लिये क्या करना होगा ?

मैं सोचता हूँ, लाठी भाँजना, छुरा चलाना, ढाल-बरछा फेंकना, तलवार चलाना, धनुर्विद्या, मल्लयुद्ध, विभिन्न प्रकार के अस्त्र चलाने की शिक्षा, ऐसे गीत, वाद्य यंत्र और स्लोगन (नारा) के साथ ड्रील, परेड़ और अनेक प्रकार के खेलों आदि का अनुष्ठान करना अच्छा है | बिच-बिच में कृत्रिम युद्धाभ्यास की भी व्यवस्था करनी चाहिये | इससे आक्रमण और आत्मरक्षा, दोनों तरह की शिक्षा होती है | सबसे अधिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिवाद करने की शिक्षा देनी चाहिये | निर्भीकता एक बड़ी बात है | लेकिन इसके नाम पर मैं विचारहीनता का समर्थन नहीं करता हूँ | स्वयम भी कहीं भी Principle forsake (आदर्श विसर्जन) करके Compromise (समझोता) करके नहीं चलियेगा और दूसरों को भी ऐसा नहीं करने दीजियेगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र., ३/१४.५.४२

07: गणसेवकगण किस प्रकार से काम करेंगे?

मैं कहता हूँ immediately (शीघ्र) defense guard (सुरक्षा-दल) Agricultural farm (कृषि क्षेत्र) और workshop (कारखाना), इन तीनों को Start (चालू) करना होगा | Defense guard (सुरक्षा-दल) आत्म-रक्षा के लिये प्रस्तुत रहते हुए सभी प्रकार के पुर्त्तकार्य करेगा जैसे रास्ता-घाट ठीक करना, जंगल साफ करना, पुष्करिणी खनना, नहर खोदना, बाँध बाँधना इत्यादि; मजदुर नहीं रखेंगे, स्वयम करेंगे | इन कार्यों के

लिये युवकों के बिच प्रवेश करना होगा, दल के दल युवकों को दीक्षित करना होगा, Disciple (शिष्य) होने के फलस्वरूप उन लोगों में normal discipline (सहज नियमानुवर्तिता) आयगा | फिर, बंगाल के प्रत्येक थाना में सत्संग का branch (शाखा) रहेगा | प्रत्येक थाना में सत्संग कृषि क्षेत्र के लिये कम से कम दो सौ बीघा जमीन की व्यवस्था करनी होगी | Branch (शाखा) के समीप ही जमीन होनी चाहिये | कर्मीगण वहाँ व्यवहारिक रूप से कृषि कार्य करेंगे, चारों ओर कृषि से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों की जानकारी देंगे, कृषि की सम्भाव्यता के सम्बन्ध में सभी की आँखें खोल देंगे, प्रत्यक्ष रूप से करके दिखायेंगे | इससे पुरे बंगाल में कृषि पुनरुज्जीवित हो जायगी, बंगाल से वह भारत के अन्यान्य जगहों में भी फैल जायगी | और उस कृषि क्षेत्र के द्वारा कर्मीगन का भरण-पोशण भी होता रहेगा | जिस प्रकार कृषि क्षेत्र होगा, उसी प्रकार एक workshop (कारखाना) भी रहेगा | वह उस इलाके में mechanical service (यांत्रिक सेवा) देगा, cottage industry (गृह-उद्योग) की machinery (यंत्रादी) manufacture (निर्माण) करेगा | जहाँ पर बहुत लोग दीक्षित हो जाएँ वहाँ कच्चे माल और सुविधाओं को देखकर लिमिटेड कंपनी के रूप में बड़े आकर का शिल्प उद्योद खोलना होगा | कारखाना बड़े शिल्प उद्योग के सहायक के रूप में रहेगा, मरम्मत आदि का काम करेगा | कोई सत्संगी व्यक्तिगत दायित्व पर इसको चलायगा | कर्मीगण सभी के मस्तिष्क में कृषि-शिल्प के सम्बन्ध में नशा पैदा कर देंगे और जो कुछ भी करें मूल रूप से यजन, याजन, इष्टभृति और सदाचार की आवश्यकता है | यह मूल आधार नहीं होने पर कोई काम सुगठित रूप से नहीं होगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ३/४.६.४२

08: गणसेवक वाहिनी का ठीक ढंग से गठन करें

शरत कर्मकार को आते हुए देखकर श्रीश्रीठाकुर सोल्लास बोल उठे - यही तो नियंता जी आ गये | शरतदा यदि स्वस्ति वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) का ठीक-ठीक गठन कर सकें, तो बहुत बड़ा काम हो जायगा | उस दिन संध्या समय होम कुण्ड के सामने जिस समय मन्त्र पाठ करके स्वस्तिसेवक-गण (गणसेवक गण) आहुति दे रहे थे, दूर से ही वह दृश्य देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा था | देखिये Nurture (पोषण) यदि दे सकते हैं, तो उससे समझ सकियेगा की हमलोगों में कितना instinctive wealth (सहजात सम्पत्ति) dormant (सुप्त) रह गया है | ऐसे मालूम नहीं पड़ता है, वह वर्णचोर आम की तरह रहता है | (कुछ आम पक जाने पर भी मालूम नहीं पड़ता है कि वह पक गया है - उसी को यहाँ वर्णचोर आम कहा गया है) | उस दिन भाइयों को लाठी भाँजने का खेल खेलते समय भी देखा, कई लोगों के मुख-मण्डल जैसे चमक रहे हैं | माल है, माल है, खोज कर निकलना होगा | रात एक, अभिनय अनेक | इसलिये Speed (गति) खूब बढ़ा देना होगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ३/२२.७.४२

09: गणसेवकगण सेवा कि बाढ़ ला दें |

स्वस्तिसेवक (गणसेवक) के प्रसंग में जो मैंने कहा है, वह कई लाख संग्रह कर लें | सेवा कि बढ़ ला दें | एक आदमी भी जिसमें भीतर और बाहर से, किसी भी तरह से अविकसित नहीं रह जाय | सभी को टान कर लम्बा कर दीजिये | आपलोग इस प्रकार से प्रस्तुत रहें कि देश में यदि किसी कारण से गभर्नमेंट कुछ दिनों के लिये अचल या विकल हो जाय, तो उस अवस्था में भी किसी एक आदमी को भी क्षति नहीं पहुँच सके | चारों ओर जिस प्रकार कि अराजकता शुरू हो गयी है, वैसी स्थिति में आपलोग यदि Equipped (तैयार) नहीं होइयेगा तो लोगों कि दुर्गति की सीमा नहीं रहेगी |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. - ४/७.९.४२

10: गणसेवक वाहिनी क्यों चाहिये ही?

प्रत्येक व्यक्ति जिससे अपने-अपने वैशिष्ट्य के अनुसार grow करे (वृद्धि पावे), उसके लिये प्राणपण से चेष्टा करियेगा | कौन क्यों suffer करता है (कष्ट पाता है), उसका मूल कारण क्या है? कौन क्यों विकसित नहीं हो रहा है, उसके विकास के मार्ग में बाधा क्या है, यह सब अच्छी तरह समझ कर जिससे उसका प्रतिविधान हो, वह करना होगा | इसके लिये ध्यान चाहिये, चिन्तन के अनुसार कार्य करना चाहिये | फिर, जान लीजिये की जिनका भला की चेष्टा कीजियेगा उनमें से कोई-कोई आपके सर्वनाश के लिये जी-जान से चेष्टा करेगा | इसलिये चलने के रस्ते में इस प्रकार बाँध बनाकर चलियेगा जिससे ये अत्याचार के स्रोत आपको बहाकर नहीं ले जा सकें |

स्वस्तिसेवक वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) का इसलिये गठन करना अवश्य ही चाहिये | यहाँ के गणसेवकों के द्वारा तपोवन के कृषि-क्षेत्र का अच्छी तरह गठन करना होगा | यहाँ पर सत्संगियों का एक गुच्छ है, वहिं एक आदर्श कृषि-क्षेत्र की व्यवस्था करने की चेष्टा कीजियेगा | Agriculture (कृषि) और Agricultural industry (कृषि सम्बन्धी उद्योग) जितना करेगा (विकसित होगा), लोगों के अन्न-वस्त्र की समस्या का समाधान भी उतना ही सहज होगा | किन्तु प्रथम कार्य हुआ, प्रत्येक locality (इलाका) में Initiates (दीक्षितों) की संख्या बढ़ाना और local worker (स्थानीय कर्मी) का सृजन करना |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ४/ ७.९.४२

एक दल जैसे class war (श्रेणी-संग्राम) करता है, उसी प्रकार हमलोगों को भी जो लोग सत्ता-विरोधी हैं, कल्याण-विरोधी हैं उस लोगों के विरुद्ध संग्राम करना उचित होगा | उन लोगों को ही heathen (विधर्मी), मोनाफेक या काफिर कहा जाता है | असत आचरण को कभी भी प्रश्रय नहीं देना चाहिये | देने से ही सर्वनाश होगा | यही हुआ मेरा श्रेणी-संग्राम | सभी सम्प्रदायों में जो सत हैं, उनलोगों को हमलोग संघबद्ध करेंगे एवं असत शक्ति जिससे वृद्धि पाकर सत्ता पर अपघात नहीं ला सकें, ऐसी चेष्टा हमलोग करेंगे | धर्म और कृष्टि (संस्कृति) के परिवेषण के द्वारा असत-बृद्धि में जिससे परिवर्तन हो सके, ऐसी चेष्टा भी हमलोगों को करनी होगी | सभी का परिवर्तन नहीं होगा | कुछ लोग होंगे जो भय के सिवा अनुगत नहीं होंगे | वास्तव में उनकी क्षति नहीं करके, वे लोग जिसमें दूसरों की क्षति नहीं कर सकें, ऐसी व्यवस्था रखनी ही होगी | इसीलिये मैं स्वस्तिसेवक वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) के प्रसंग में आपलोगों को इतना कहता हूँ | इन सब का कार्य होगा कृषि, शिल्प, स्वास्थ्य और सुरक्षा | प्राथमिक अवस्था में कृषि और सुरक्षा की Priority (प्राथमिकता देकर शिल्प और स्वास्थ्य की उन्नति की ओर सजाग दृष्टी रखते हुए चलना होगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. - ४/१४.९.४२

11: देशी खेलों की भी चर्चा करना

आजकल देशी खेल बन्द होते जा रहे हैं | यह अच्छा नहीं है | फुटबॉल, हॉकी, क्रिकेट, बेडमिंटन जो इच्छा हो खेलों, जिसका जैसा पसन्द हो वैसा खेले, किन्तु देशी खेलों का त्याग करना ठीक नहीं है | बल्कि मैं समझता हूँ, हमलोगों के देश में प्राचीन काल में जो सब खेल प्रचलित थे, उनके प्रसंग में किताबों में खोजकर उन्हें फिर Introduce (चालू) करना अच्छा होगा | हमलोगों के खेल कूद, गाना-बजाना, आमोद-स्फूर्ति सभी में हमलोगों की कृष्टि (संस्कृति) की छाप दिखाई देनी है | इसलिये कृष्टि (संस्कृति) के जागरण के लिये उन सब की ओर भी ध्यान देना होगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ४/२६.९.४२

12: गणसेवक का संग्रह करना ही चाहिये

पहले भी कहा है, अभी कह रहा हूँ कि सर्वसाधारण की सेवा के लिये स्वस्तिसेवक (गणसेवक) को Recruit (संग्रह) करना आवश्यक है | .... उन सबों को सभी प्रकार से disciplined (अनुशासित) कर लेना होगा | वे सब कृषि, शिल्प, स्वास्थ्य और सुरक्षा के सम्बन्ध में कार्य करेंगे) |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ४/१९.१०.४२

तेजविर्यहीन भला आदमी होने से काम नहीं चलेगा | भला आदमी होने के लिये कल्याण बुद्धि के द्वारा प्रबुद्ध होकर शक्तिमान होना होगा, सुकौशली होना होगा, दक्ष और यौग्य होना होगा | पराक्रमी होना होगा, ताकि विरुद्ध शक्ति के सामने पराभूत नहीं होना पड़े | और इसी के लिये संभल कर चलने के लिये मैं कहता हूँ | यह संसार जटिल है और इसके पग-पग पर लुकी-छिपी अनेक विपदाओं की संभावनाएँ छिपी हुई हैं | उन सबों को टाल कर चलना, नियंत्रण करना और प्रतिरोध करने योग्य शक्ति, बुद्धि और कौशल यदि नहीं रहे, प्रस्तुति यदि नहीं रहे, तब हमलोग जो उन सब के शिकार हो जायँगे इसमें क्या कोई सन्देह है? और सभी समय तुम ये सब अकेले नहीं कर सकते हो | Evil Force (असत शक्ति) इस संसार में organised (संगठित) है | ढाल नहीं है, तलवार नहीं है, निधिराम सरदार की तरह तुमलोग यदि अकेला उसके विरुद्ध लड़ने जाओगे तो खोजने पर फिर तुम नहीं मिलोगे | इसलिये यजन, याजन और इष्टभृति के द्वारा इष्टार्थी जनबल, धनबल और सत-संहति का गठन करना होगा | सत का जिस प्रकार पोषण देना होगा, उसी प्रकार असत का निरोध करना होगा | मैं जो स्वस्तिसेवक (गणसेवक) के संग्रह करने के बारे में कह रहा हूँ, उसे करना ही चाहिये | वे crusaders for कृष्टि (संस्कृति रक्षणार्थ धर्म-योद्धा) होंगे | मनुष्य का भला करने की एक रीती है, उसी रीती के अनुसार यदि नहीं चला जाय, तो हित में विपरीत होगा, भला करना ही बुरे का कारण बन जायगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ४/२१.१०.४२

13: गणसेवक वाहिनी की नियमावली सम्बन्धी किताब

स्वस्ति-वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) के सम्बन्ध में एक किताब निकलने की आवश्यकता है | क्या और किस तरह से कार्यान्वित होगा, ऋत्विक-संघ के साथ इसका क्या संपर्क रहेगा या नहीं रहेगा इत्यादि बातें उसमें लिखी हुई रहेंगी |

प्रश्न- स्वस्ति वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) के सम्बन्ध में सभी बातेंz आप तो अभी भी स्पष्ट रूप से नहीं कहे हुए हैं |

श्रीश्रीठाकुर - Detail (विस्तार से) नहीं कहने पर भी मूल बातें तो कह चूका हूँ | मेरा उद्देश्य क्या है, यह भी जानते हैं | उसी हिसाब से लिखियेगा | उसके बाद सूक्ष्म-सूक्ष्म विषय के सम्बन्ध में यदि जीज्ञासा हो तो पूछ लीजियेगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ४/६.११.४२

14: गणसेवक वाहिनी कोई प्रतिक्रियात्मक संगठन नहीं है

आपलोगों को जो स्वस्तिसेवक (गणसेवक) दल के संगठन के विषय में मैंने कहा है वह किन्तु कोई Reactionary (प्रतिक्रियात्मक) संगठन नहीं है | अपने और परिवेश की सुरक्षा के लिये यदि हमलोग स्वयं प्रस्तुत नहीं होते हैं उस सम्बन्ध में यदि परमुखापेक्षी होकर रहते हैं, तो ऐसी स्थिति में उतनी बड़ी कमी रह जाती है | देशवासियों में प्रयोजनीय किसी प्रकार के गुण या दक्षता का यदि अनुशीलन (अभ्यास) नहीं होता है, तो उस रंध्र (छिद्र) के रस्ते से शनि (अमंगल) प्रवेश कर जा सकता है | बहुत सारे गुण रहने पर भी सामान्य गुण के अभाव में देश का अस्तित्व विपन्न हो जा सकता है | इसलिये क्षात्र-गुण की चर्चा के ऊपर में जोर देने के लिये कहता हूँ | क्षत्रियोचित संस्कार संपन्न जो लोग हैं, वे सब इस को विशेषरूप से करेंगे | किन्तु अन्य सब भी छोड़ेंगे नहीं | प्रत्येक वर्ण अपने वर्णोंचित गुणों के अनुशीलन (अभ्यास) की प्रधानता देते हुए, दुसरे वर्णों का अनुशीलन यदि थोडा बहुत करें, तो उससे दक्ष रहने में सुविधा होती है | इसके अतिरिक्त साहस, पराक्रम और वीरत्व का अभ्युदय यदि नहीं होता है, मनुष्य यदि भीरु और कापुरुष होकर रहता है, अत्याचार, अविचार के विरुद्ध पराक्रम के साथ यदि खड़ा नहीं हो सकता है, तो उसकी मनुष्यत्व ही बहुलांशतः म्लान हो जाता है | इसलिये स्वस्ति-सेवकगण (गणसेवकगण) को कृषि, शिल्प और स्वास्थ सम्बन्धी सेवा के लिये जिस प्रकार प्रस्तुत होने के लिये मैंने कहा है सुरक्षामुलक सेवा के लिये भी उसी प्रकार प्रस्तुत होने के लिये कहा है | इसका मात्र सामायिक प्रयोजन नहीं है, इसका चिरंतन प्रयोजन है |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ५/१०.५.४३ |

15: कृषि और शिल्प के सम्बन्ध में क्या करना होगा ?

सत्संग कृषि स्थान का गठन करके एवं सत्संगी कृषकगण के द्वारा उन्नत ढंग से कृषि करके उस विषय को आसपास के लोगों के बिच संचारित कर देना होगा एवं कृषि के ऊपर आधारित कुटीर-शिल्प आदि जिससे विकसित हो सके उस दिशा में भी लक्ष्य रखना होगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ५/२९.१२.४३

16: किन-किन कुटीर-शिल्पों की और लक्ष रखना होगा ?

मैं यदि एक लिस्ट बनाकर दूँ और उसी के अनुसार यदि करना चाहो तो नहीं होगा | स्थानीय अवस्था, परिस्थिति, प्रयोजन, सुविधा इत्यादि के ऊपर लक्ष्य रखकर बुद्धि लगाकर देखना होगा | अनुसंधानपूर्ण, अविष्कार मुखर सेवा बुद्धि ही शिल्प के प्राण हैं | सुयोग के संधान में रहना होगा, उसी विषय में चिंतन करना है, Keen observation (तीक्ष्ण पर्यवेक्षण) के साथ चलना होगा, जिन लोगों के उस दिशा में Knack (दक्षता) है उनलोगों से विचार-विमर्श करना होगा, स्वयं पढना-सुनना होगा, लोगों की क्या सब आवश्यकताएँ हैं और उनकी पूर्ति किस प्रकार हो सकती है- इन सब के प्रसंग में विचारना है | इस प्रकार करते-करते मस्तिष्क में स्पष्ट चित्र आ जाता है | केवल तुम्हारे मस्तिष्क में स्पष्ट होने से नहीं होगा, जो करेगा उसके मस्तिष्क में भी स्पष्ट होना चाहिए |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ५/२९.१२.४३

17: सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं को शुभावह कर देना होगा

इसी के लिये ही स्वस्ति-सेवक (गणसेवक) की आवश्यकता है | मैं सोचता हूँ तुमलोगों में से व्यक्तिगत रूप से बन्दुक का लाइसेंस लेना जिनलोगों के लीए संभव हो, उनके लिए ले लेना अच्छा है | बन्धुक रहने पर असमय में काम देती है | केवल स्वस्ति-सेवकों (गणसेवकों) को ही नहीं, अन्य सभी को भी यथासंभव लाठी चलाना, चुरा चलाना, युयुत्सू (आत्मरक्षा का एक जापानी तरीका), मुक्काबजी, साईकिल चढ़ना, मोटर चलाना, घोड़े पर चढ़ना, तैरना, एक लगातार बहुत माइल चलना, बहुत देर तक परिश्रम करना, क्षुधा-तृष्णा शीत-ताप इत्यादि सहन करने का अभ्यास करना आदि शिक्षा में शिक्षित होने की आवश्यकता है | साहस और प्रतिउत्पन्न बुद्धि भी चाहिये | सभी प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों के सम्मुखीन होकर उसका शुभावह करने के लिये जिस प्रस्तुति का प्रयोजन हो, हमलोगों के बहुत लोगों में वैसी प्रस्तुति नहीं है | तुमलोग.... यदि उस प्रकार से प्रस्तुत हो जाओ तो तुमलोगों को देखकर बहुतलोग उपकृत होंगे | तुमलोगों को जीवन का प्रतीक, वीरता का प्रतीक, अभ्युदय का प्रतीक, कल्याण का प्रतीक, संहति का प्रतीक, शांति का प्रतीक, अमृत का प्रतीक होना चाहिये | ... चारों ओर की अवस्था अत्यंत संकटपूर्ण है | किन्तु इस संकटपूर्ण अवस्था को देखकर ही मुझे फिर आशा होती है, आज तुमलोगों के योग्य होने का यह परम सुयोग समुपस्थित है | क्योंकि, देश को बचाना चाहते हो तो तुमलोगों को इसका समाधान करना ही होगा और इसका समाधान करने का माने है - विराट शक्ति और सामंजस्य का आधिकारी होना |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ५/१.१.४४

18: जलाभाव निवारण हेतु गणसेवक-वहिनी

एक दादा ने कहा- बाबा, हमलोगों के जिला में जल के आभाव के कारन बहुत कष्ट है |

श्रीश्रीठाकुर- तुमलोग स्वस्तिसेवक (गणसेवक) का संग्रह करके नहर, बड़ा जलाशय-पोखोर व्यवहार योग्य निर्माण, Tube-well (नलकूप) गाड़ना आदि काम यदि करो तो इसका उपाय हो सकता है | जो भी काम करना चाहो, दीक्षितों की संख्या खूब बढ़ने की आवश्यकता है | देश में जनसंख्या चाहे जितनी भी हो, किन्तु उससे जनबल नहीं होता है, यदि वे सब किन्हीं आदर्श में संहत नहीं हों | जनबल तभी होता है जब पारस्परिकता बढती है | और एक आदर्श परायणता के द्वारा ही पारस्परिकता बढती है |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र, ५/३.१.४४

19: देश और दस का स्वस्ति विधान ही गणसेवक का काम

स्वस्ति वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) का गठन करना होगा | उन सबों का काम ही होगा, सभी अस्वस्ति (अमंगल) और अशान्ति को निर्वासित (विनष्ट) करके देश का और दस का स्वस्ति विधान (मंगल करना) | स्वस्ति-वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) के लिये भी स्वस्तिनायक (गणनायक) की आवश्यकता है |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ७/१९.२.४६

20: || वर्त्तमान परिस्थिनी में करणीय ||

Present situation of India (भारत की वर्त्तमान परिस्थिति) जैसा है, इससे ऐसा लगता है कम से कम ५ करोड़ स्वस्तिवाहिनी (गणसेवक वाहिनी) अगर समाजसेवा के लिए thoroughly equipped (सब तरफ से तैयार) होती है तभी सब तरफें सम्हाल दी जा सकती हैं | नहीं तो मुश्किल है | उन लोगों के काम होंगे - लोगों के कृषि, शिल्प, स्वास्थ और सुरक्षा को त्रुटिहीन बना डालना | वे लोग स्वयं धर्म, इष्ट, कृष्टि लेकर चलेंगे और देखेंगे कि असदाचारी चलन को देश के भीतर प्रश्रय न मिल पाए | भारत के हर जिले में उपयुक्त देख-रेख में सभी जगहों में अपनों को लगाए रहेंगे | Government (सरकार) देश के लोगों पर tax (कर) लगाकर उससे अगर सरकारी कर्मचारी के हिसाब से इन लोगों को maintain (प्रतिपालन) करती है तो इन कामों कि Sanctity (पवित्रता) नहीं रहेगी | ये लोग होंगे इष्टप्रबुद्ध स्वेच्छासेवक | इन लोगों का कोई condition (शर्त)

या demand (दावा) नहीं रहेगा | लेकिन इन लोगों की सब तरहों की जरूरतों पर तीक्ष्ण दृष्टि आप लोगों को रखनी पड़ेगी, जैसे बाप लड़के के लिए करता है ठीक वैसे ही | नहीं तो सब गड़बड़ा जाएँगे | और देश के लोगों को वास्तव सेवाओं से इस प्रकार बढ़ा देना पड़ेगा जिससे इस सेवायज्ञ के पोषण और वृद्धि के लीये वे लोग unconditional religious offer (निःशर्त पवित्र दान) के हिसाब से आपलोगों की केन्द्रसंस्था को नियमित रूप से दान देते जाएँगे | देश के लोग अगर संहत, संयत, उच्छल और पराक्रमी हो उठते हैं तो "भारत आवार जगतसभाय श्रेष्ठ आसन लबे (भारत फिर से जगतसभा में श्रेष्ठ आसन पाएगा |)

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. ११/१०.५.४८

21: हमलोग किस बुनियाद पर खड़े होंगे ?

मनुष्य के खड़े होने की बुनियाद ही है धर्म | सपरिवेश जो निज अस्तित्व को धारण करता है वहीं है धर्म | ये नीतियाँ जिनके जीवन में मूर्त हुई हैं वे ही हैं आदर्श | निष्ठापूर्वक उनका अनुसरण करने से धर्म पालन वास्तविक हो पाता है | वे हिन्दू को यथार्थ हिन्दू बना देते हैं, मुसलमान, बौद्ध, इसाई को यथार्थ मुसलमान, बौद्ध, इसाई बना देते हैं | पूर्वतन प्रत्येक महापुरुष के प्रति वे हमलोगों की श्रद्धा संदीप्त (प्रज्वलित) कर देते हैं | वे दिखा देते हैं कि धर्म कभी भी एक के अतिरिक्त दो नहीं होता है एवं सभी महापुरुषों की मूल नीति एक ही है | जो भिन्नता दिखाई देती है वह केवल देश, काल, पात्र के Difference and distinctiveness (विभिन्नता और विशिष्टता) के अनुसार है | मनुष्य धर्मपरायण होने पर ही प्रेमपरायण होता है, सेवापरायण होता है | और ऐसा होने पर ही वह स्वतः ही दुसरे का भी सत्ता बान्धव हो जाता है | जितने अधिक आदमी इस प्रकार के होते हैं उतना ही देश का मंगल है | .... सत्संग में परमपिता की दया से जो हो रहा है, सर्वत्र उसको प्रसारित कर देना होगा | यहाँ पर कितनी जगहों के, कितने सम्प्रदायों के लोग हैं; किन्तु कोई किसी को पराया नहीं समझता है | एक की विपत्ति में दूसरा उसकी सहायता में कूद पड़ता है | सभी मिलकर जैसे एक परिवार हो | लेकिन धर्म और संहति को अक्षुण रखने के लिये जैसा उसका परिपालन और प्रचार चाहिये वैसे ही समीचीन और सुनियंत्रित असत-निरोधी पराक्रम भी होना चाहिये | सरकार की और से जिस प्रकार देश की सभी दिशायों की उन्नति ऐक्य (एकता) पर ध्यान देना आवश्यक है उसी प्रकार Defence force (प्रतिरक्षा शक्ति) को भी खूब Powerful (शक्तिमान) करना होगा | White corpuscle (श्वेत कोणिका) अर्थात Resisting Power (प्रतिरोधी शक्ति) यदि सर्वतोभाव से तैयार कर नहीं रखते हो, वे सब यदि अच्छी तरह Administrated (शासित) नहीं होते हैं, उन सभी को यदि फैलाकर नहीं रखते हो कि जब भी आवश्यकता हो तो एक पुकार में ही

हाजिर हो जाय तो काम नहीं चलेगा | कम से कम पाँच करोड़ कि आवश्यकता है | कब कौन-सी परिस्थिति आती है उसका क्या ठिकाना !

प्रश्न- इतनी बड़ी संख्या में सेना तैयार करने नहीं देगा | बहुत तरफ से बाधाएँ आयँगी |

श्रीश्रीठाकुर - सबको Solder (सैनिक) के रूप में रखने का क्या प्रयोजन है ? कुछ दल रहेगा शान्ति-सेना के रूप में, कुछ दल रहेगा स्वस्ति सेवक (गन-सेवक) के रूप में | स्वस्ति-सेवक (गण सेवक) का काम होगा कृषि, शिल्प, स्वास्थ और सुरक्षा की उन्नति की व्यवस्था करना | ये सब समाज सेवा के अंतर्गत ही आते हैं | इनकी बराबर आवश्यकता रहेगी जिससे इन सब विषयों में लोगों की efficiently (दक्षतापूर्वक) सहायता कर सके, उसके लीये उन सभी को training (विस्तृत प्रशिक्षण) देना होगा | रोग-बलाय, दु:ख-दारिद्रय को समाप्त कर देना होगा | सत्ता पोषणकारी योग्यता, स्वास्थ, सम्पद, शक्ति इत्यादि धर्म के ही अपरिहार्य अंग हैं |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. १२/५.७.४८

अशुभ शक्ति सर पर न चढ़ बैठे उसके लिये स्वस्तिसेवक वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) को भी सुसंगठित कर देना होगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. १५/२५.१.४९

22: गणसेवकगण सभी को बचायेंगे

आज हमलोगों की दु:सह समस्या है | देश की इस प्रकार की परिस्थिति आ सकती है, यह जानकर मैंने पहले ही कहा था - हमलोगों को इस प्रकार से तैयार रहने की आवश्यकता है, जिससे दु:ख, दैन्य, कुफल से मनुष्य को बचा सकूँ | स्वस्ति-वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) के विषय में कहा था- जिससे वे यथोपयुक्त शिक्षा लेकर संहत समर्थ से उन्नति प्राप्त करके हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन सभी को इस कुफल से बचा सके | हम सुनते बहुत हैं, कुछ करते नहीं है | स्वस्ति-वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) के प्रसंग में मैंने बहुत पहले ही कहा था | यह Peace Army Volunteers (शान्ति-वाहिनी स्वेच्छा सेवकगण) यदि समयानुसार संगठित हो गया रहता, तब हमलोग तो उपकृत होते ही, साथ-साथ हमलोगों के देश, समाज, राष्ट्र भी उपकृत होते | आन्तरिक शक्ति स्वयम ही दुरुस्त रख सकता था |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. १९/१२.२.१९५०

23: गणसेवक वाहिनी एक पृथक संस्था होगी

स्वस्ति-वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) का काम होगा अन्याय, अत्याचार का अवरोध करना- अत्याचारी को जिससे रास्ता नहीं मिले, बढ़ नहीं सके, वैसा सब करना | स्वस्ति वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) सत्संग (मूल संस्था) से एक अलग संस्था होगी | किन्तु वह सत्संगियों के परिचालन के अधीन होगी |

स्वस्तिसेवकों (गणसेवकों) को all-round education (सर्वोतोमुखी शिक्षा) रहनी चाहिये | वे सभी प्रकार के काम कर सकें- कुली के काम से लेकर प्रशासन के काम पर्यन्त |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. १९/ १३.२.१९५०

24: गणसेवक प्रयोजन के अनुसार शान्ति सेना का भी काम करेंगे |

बहुत दिन पहले ही कम से कम तिस हजार स्वस्ति सेवक (गणसेवक) बनाकर उनलोगों को सभी प्रकार से सुगठित कर देने के लिये मैंने कहा था | आवश्यकता के अनुसार वे सब शान्ति सेना का काम करेंगे एवं सामान्यतः लोक सेवा का काम करेंगे, अन्याय का प्रतिरोध करेंगे, कृष्टि विरोधी (संस्कृति विरोधी) कोई घटना नहीं होने देंगे |

स्वस्तिसेवक (गणसेवक) हुआ सन्यासी सैनिक | अभी उनलोगों का काम सुरक्षा का है | और साथ-साथ कृषि, शिल्प, स्वास्थ का भी काम होना चाहिये | जैसे कहीं पर परती जमीन पड़ी हुई है | ये लोग ट्रैक्टर संग्रह करके जमीन को जोत कर, पानी की व्यवस्था करके दूसरे के पास छोड़ आये | वे सब समाज की सेवा के लिये उस जमीन में पैदा करेंगे | आरम्भ में तिस हजार स्वस्तिसेवक (गणसेवक) का संग्रह करने से वे ही बहुत कुछ कर सकेंगे |.... सम्पूर्ण देश में आच्छादित हो जायगा |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. १९/२६.२.५०

25: गणसेवक आत्मत्याग करके मनुष्य के मंगल के लिये आत्मनियोग करेगा

लोक सेवा के लिये स्वस्ति वाहिनी (गणसेवक वाहिनी) की आवश्यकता है, जो सब आत्मत्याग करके मनुष्य के मंगल के लिये आत्मनियोग करेंगे | उनलोगों का काम स्वास्थ्य, शिल्प, कृषि, सुरक्षा करना होगा | उन सब की सेवा के आधार पर जनगण सुख, शान्ति और सर्वतोमुखी ऋद्धि (अभ्युदय) का संधान पायँगे |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. १९/१८.४.५०

26: गणसेवकों को जो करना होगा

सर्वप्रथम तो वे दीक्षित होंगे | उसके बाद वे सब इस प्रकार से तैयार होंगे जिससे मनुष्य को विभिन्न प्रकार से सेवा दे सकें | ये सब परती जमीन को जोतने की चेष्टा करेंगे, उन्नत प्रणाली से कृषि किस प्रकार की जाती है, यह सब करके दिखायँगे | कहीं पर यदि जल का आभाव हो, तो वे सब दल-बल सहित, अपनी ही चेष्टा से, तलाब बना देंगे और ट्यूबवेल गाढ़ेंगे | विभिन्न प्रकार के छोटे कुटीर शिल्प सम्बन्धी शिक्षा ग्रहण करके वे सब गाँव-गाँव में उसको प्रचारित कर देंगे | देश में मलेरिया नहीं रहे उसके लिये जंगल साफ करेंगे, गड्ढा-डोबरा को साफ करेंगे, नहर खोदेंगे, मच्छर मारने की व्यवस्था करेंगे | और वे सब लाठी भाँजना, छुरी चलाना, युयुत्सु (एक प्रकार का जापानी व्यायाम) इत्यादि इस प्रकार सीखेंगे जिससे आवश्यकता होने पर मनुष्य की सुरक्षा की व्यवस्था कर सकें | संक्षेप में, कृषि, शिल्प, स्वास्थ और सुरक्षा के लिये जिस अवस्था या जिस परिवेश में जो भी करने की आवश्यकता है वह सब वे लोग करेंगे | संक्षेप में, वे सब लोकसेवक हुए | वे सब धर्म और कृष्टि (संस्कृति) के भी सेवक हैं |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. १९/१८.४.१९५०

हमलोगों को पाँच करोड़ स्वस्तिसेवक (गणसेवक) की आवश्यकता है | उनलोगों को कृषि, शिल्प, स्वास्थ और सुरक्षा इन चारों प्रकार के काम की शिक्षा देने की आवश्यकता है, जैसे चतुर्भुज | शान्ति के समय ये सब कृषि, शिल्प, स्वास्थ इन्हीं सब संगठनमूलक काम युद्धकालीन क्षिप्रता के साथ करेंगे | प्रत्येक काम का दल एक-एक कमाण्डर के अधीन रहेगा | युद्ध के समय प्रतिरक्षा की और देखेगा | संगठन मूलक कामों को सामरिक उत्साह, कौशल और संगठन के साथ करेगा | मोटामोटी इन कामों को सिखने से nerve (स्नायु), muscle (पेशी) और brain (मस्तिष्क) बहुत कुछ all-round (सर्वोतोमुखी) educated (शिक्षित) हो जायगा | वैशिष्ट्य के ऊपर निर्भर करके विभिन्न प्रकार के कामों को नहीं करने से nerve (स्नायु), muscle (पेशी) और brain (मस्तिष्क) की latent capacity (सुप्तशक्ति) सही माने में प्रस्फुटित नहीं होती है |
` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. - १९/१५.१०.५०

पचहत्तर लाख स्वस्तिसेवक (गणसेवक) की व्यवस्था कर लेने पर देश और दुनिया की स्थिति ही बदल जा सकती है |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. २०/१०.७.५१

27: सरकारी व्यवस्थापना से गणसेवक वाहिनी

आज जिस प्रकार विस्थापितों को भिक्षा देता है, मैं ऐसा नहीं देता | मैं उन लोगों से कुटीर शिल्प, कृषि इत्यादि काम करवा कर उन लोगों को अपनी योग्यता पर निर्भरशील बनाने की चेष्टा करता और सबसे पहले पचहत्तर लाख स्वस्तिसेवक (गणसेवक) का संग्रह करता | उनलोगों को कृषि, शिल्प, स्वास्त और सुरक्षा के लिये तत्पर रहने योग्य बना देना |

` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. २०/७.४.५१

28: गणसेवक वाहिनी के जीवन चलन का आदर्श

हिंसक लोगों के द्वारा काम नहीं होता है | अदम्य साहसी, निष्ठावान लोगों से काम होता है | तुमलोग राष्ट्रलोलुप नहीं बनना | लोक सेवा के लिये हमलोगों को बहुत परिश्रम करना होगा | लोगों के सामने तुमलोग धर्म की जीवन्त मूर्ति बन जाओ | तुमलोग सत्तासंवर्धनकारी कृष्टि (संस्कृति) को मूर्त कर डालो | सम्भव है, ऐसा दिन आ जाय, जिस दिन से राष्ट्र का प्रयोजन ही नहीं रहेगा | फिर सत्ययुग ले आओगे | सत्य माने सत्ता | जितने भी ism (बाद) क्यों न रहे, सत्तावाद से बड़ा कोई ism (वाद) नहीं है |

मुख से जो भी कहो-- अपने चरित्र, परिवार, परिवेश सभी में उसको मूर्त कर देना होगा | कहो कुछ, करो कुछ दूसरी तरह से, उससे तो नहीं होगा |

जिस नीति के द्वारा बच सकता हूँ, बढ़ सकता हूँ, उसको विसर्जित कर देने से लाभ नहीं है | देश के मृतप्राय होने से अपने वैशिष्ट्य को सुरक्षित रखने की क्षमता नहीं रहती है | जो powerful (सक्षमताशील) हैं, उनके पैर चाटकर बैठने की इच्छा होती है | हमलोगों को रूस या इंगलैंड बनने से लाभ नहीं है |
` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` - आ.प्र. २१/२६.१.१९५३

~~~~ समाप्त ~~~~

~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~` ` ` ` ` ` ` ` ****वन्दे पुरुषोत्तमम् |****` ` ` ` ` ` ` ` ` ` `~~~~ ~~~~ ~~~~ ~~~~